पंजीयन क्रं. 06/09/01/04737/04

विचार मासिक पत्रिका

कुल पृष्ठ 24, वर्ष 3, अंक 36 | माह - मार्च 2022, मूल्य - निःशुल्क

आपके विकास को समर्पित

॥ विचार समिति ॥

(स्थापना वर्ष 2003)

दंत चिकित्सा परामर्श शिविर में 35 मरीजों की निःशुल्क जांच

पदाधिकारी

कपिल मलैया
संस्थापक व अध्यक्ष
मो. 9009780020

सुनीता जैन
कार्यकारी अध्यक्ष
मो. 9893800638

सौरभ रांधेलिया
उपाध्यक्ष
मो. 8462880439

आकांक्षा मलैया
सचिव
मो. 9165422888

विनय मलैया
कोषाध्यक्ष, मो. 9826023692

नितिन पटैरिया
मुख्य संगठक, मो. 9009780042

अखिलेश समैया
मीडिया प्रभारी, मो. 9302556222

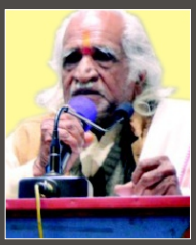

हरगोविंद विश्व
मार्गदर्शक

राजेश सिंघई
मार्गदर्शक

श्रीयॉश जैन
मार्गदर्शक

गुलझारीलाल जैन
मार्गदर्शक

प्रदीप रांधेलिया
मार्गदर्शक

अंशुल भार्गव
मार्गदर्शक

विचार समिति का मासिक प्रकाशन

विचार मासिक पत्रिका

वर्ष - 3, अंक - 36, मार्च - 2022

संपादक

आकांक्षा मलैया

प्रबंधक व प्रकाशक

विचार समिति

स्वामित्व

विचार समिति

258/1, मालगोदाम रोड, तिलकगंज वार्ड,
आदिनाथ कार्स प्रा. लिमि.
के पीछे, सागर (म.प्र.)
पिन - 470002

Email: sanstha.vichar@gmail.com

Phone: 9575737475

07582-224488

मुद्रण

तरूण कुमार सिंघई, अरिहंत ऑफसेट
पारस कोल्ड स्टोरेज, बताशा गली,
रामपुरा वार्ड, सागर (म.प्र.)
पिन - 470002

इस अंक में

आलेख :-

1. सभ्यता का विस्तार :
संस्कृति का ह्रास 4

2. हिंदी का बढ़ता कद 6

विचार समिति की गतिविधियां :-

1. महिलाएं आत्मनिर्भर होने की
तरफ बढ़ा रहीं कदम 8

2. समाज की कुरीतियों को समाप्त करने वाले संत रविदास जी
की जयंती पर विचार समिति ने किया सम्मान 10

3. स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण योजनाओं
का लाभ कैसे लें 11

4. पांच हजार से अधिक परिवार बना रहे हैं
मटका जैविक खाद 15

5. दांतों की समस्या पूरे स्वास्थ्य को
प्रभावित करती है : डॉ. अंजलि जैन 17

6. पॉलिसी रिसर्च फाउंडेशन के सहयोग से
समिति सागर में रिसर्च का कार्य करेगी 19

7. वर्ल्ड एनजीओ डे - शुभकामना संदेश 20

8. मोहल्ला विकास योजना से संचालित हैं 127 टीमें 21

मीडिया कवरेज :- 22

सभ्यता का विस्तार : संस्कृति का ह्रास

सुनीता जैन
कार्यकारी अध्यक्ष
विचार समिति

आज देश में धनवैभव के मूल्य बढ़ गये हैं और नैतिकता के मूल्य शून्य हो गये हैं। गरीबी की गरिमा, सादगी का सौन्दर्य, संघर्ष का हर्ष, समता का स्वाद और आस्था का आनंद, यह सब हमारे आचरण से पतझर के पत्तों की तरह झर गये हैं। बुढ़ापा जाड़े के मौसम जैसा है, प्रतिक्षण स्मरण करा देता है कि अब रोशनी का खजाना खत्म होने को है, अंधकार छाने ही वाला है। उम्र सिर्फ बालों पर नहीं आती, चेहरे से नहीं झलकती, भागते जा रहे वर्षों में नहीं ठहरती। बढ़ती उम्र को नकारात्मक ढंग से देखने की हमारी आदत है किन्तु इस सोच से ऊपर उठकर यदि हम सोचें कि जीवन के अनुभवशील लक्षणों में एक दूसरे का साथ महसूस करने की उम्र है। एक समय था जब दो या तीन पीढ़ियां साथ-साथ रहतीं थीं। परिवार में बच्चों की संख्या अधिक होती थी। परिवार का मुखिया अपने परम्परागत व्यापार से आजीविका का अर्जन करते थे। उनके व्यापार में सभी सदस्य सहयोगी होते थे। गृहणियां परिवार की अन्य व्यवस्थाओं में संलग्न रहती थी। आपस में सौहार्द्र और भाईचारा था। घर के बड़े-बुजुर्ग मार्गदर्शन की भूमि में और आपस में समन्वय बनाए रखते थे। बुजुर्गों के अनुभव का लाभ पूरे परिवार को मिलता था और बुजुर्गों के यथोचित सम्मान के लिए परिवार का प्रत्येक सदस्य सजग होता था। आज पीढ़ियों का द्वन्द हर परिवार में दिखाई देता है। एक से दूसरी में पहुंचते-पहुंचते जीवन ही बदल जाता है। परिवार की बहुत सी मान्यताएं और आवश्यकताएं भी बदल जाती हैं। जबकि बीते कल के प्रति हमें आभारी होना चाहिये जिसने हमें वर्तमान दिया है।

परिवर्तन की हवा में घर के मुखिया के साथ गृहणियां भी अपने भौतिक संसाधनों की पूर्ति के लिए अर्थार्जन के लिए आगे आईं। संतान की सीमित संख्या का दौर चला है। सुविधाओं के दौर में हमारी आवश्यकताएं दिन-प्रतिदिन नये-नये रूप में सामने आ रही हैं। उनकी पूर्ति के लिए परिवारों में होड़ लगी है। घर की महिलाएं भी घर की चारदीवारी से निकलकर पुरुष के कंधे से कंधा मिलाकर अपने योगदान के लिए सहयोगी बनीं। नगर, महानगरों की चमक धमक उन्हें इन कार्यों के लिए प्रेरित कर रही हैं। आर्थिक स्थितियों को सुदृढ़

बनाने के लिए गृहणियां भी व्यवसाय या नौकरियों की ओर उन्मुख हैं। परिवार विघटित हो रहे हैं। इनके एक ओर सकारात्मक परिणाम हैं तो दुष्पारिणाम भी समक्ष हैं। इस विघटन के लिए मूलत: भौतिक संसाधनों की होड़ को सीधा दोष दिया जा सकता है। कहा जाता है कि बुढ़ापे में खोटा सिक्का ही काम आता है संतान में संस्कारों से अधिक कैरियर की होड़ में उच्च शिक्षा और ऊंचे स्वप्न सहायक हैं। कैरियर के लिए बच्चे, बुजुर्गों से दूर होते जा रहे हैं। बच्चे फ्लाइंग विजिट देकर ही अपने कर्तव्यों की इतिश्री समझते हैं।

असल जिन्दगी रिटायरमेन्ट (सेवानिवृत्ति) के बाद ही प्रारंभ होती है। इसके पहले तो बच्चों की जरूरतों के बारे में सोचना समझना, उसे पूरा करना, उसके बारे में चिन्ता करना ही जीवन का प्रमुख लक्ष्य रहता है।

इस असल जिंदगी में वह अपने बच्चों से बहुत सी अपेक्षाएं संजोकर रखता है। वह अपने बच्चे की ऊंची नौकरी, अधिक आय, उनकी सुख सुविधाओं देश-विदेश के भ्रमण का कोरा भ्रम पालता है।

बुजुर्ग को अपने अकेलापन काटने के लिए अपनी हर समस्या के समाधान के लिए स्वयं ही हल खोजना होता है। वह जानता है जिंदगी कब, कहां किस स्थिति में संघर्ष करेगी। किसी समाज के स्वस्थ, रचनात्मक और मानवीय परिदृश्य का आधार वृद्धों के सम्मान से ही अंकित किया जाता है। अत: समाज के चिन्तकों ने अपने साहित्य में इस समस्या को प्रस्तुत किया है। यह समस्या अब अंतराष्ट्रीय स्तर पर विचारणीय है। रूसी लेखक चेखव, ग्रोब्रियल गार्सिया मारर्वेज जैसे अनेक लेखकों ने देश के साहित्यकार प्रेमचंद, ऊषा प्रियंवदा, चित्रा मुदगल, भीष्म साहनी, मोहन राकेश ने अपने लेख, कहानी या उपन्यास में इस समस्या को उकेरा है। फिल्म जगत ने भी 'दुनिया ने माने' से लेकर 'बागवान' तक अनेक फिल्में इस विषय पर बनाई हैं।

शासन भी इस समस्या के मूल को समझने लिए अछूता नहीं है। उसने भी अनेक सुविधाएं यथा आयकर में छूट, बैंक आदि में अतिरिक्त ब्याज, रेलवे में छूट, वृद्धाश्रम, वृद्धावस्था पेन्शन, शासकीय कर्मचारी को पेन्शन और संविधान में अनुच्छेद 41 के अधीन दण्ड संहिता में वृद्ध का भरण पोषण अधिकार (धारा 125) आदि प्रावधानित कर अपनी संवेदनशीलता को स्पष्ट किया हैं।

अत: जरूरत उन कंधों को जिनने बचपन में सहारा दिया उन्हें उन बाहों का जब भी संध्या की यह लालिमा में उम्मीद, आशा और अनुभव सिर चढ़कर बोलेगा और कह उठेगा 'तोता कहां रोता है'।

हिंदी का बढ़ता कद

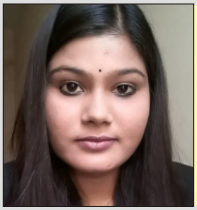

एड. प्रियंका तिवारी
भोपाल

भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी ने कहा था कि 'जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह कभी समृद्ध नहीं हो सकता'

हिंदी भाषा राष्ट्र के जनसमूह की भाषा है, जो सम्प्रेषण की सीमाओं को तोड़कर आज वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बनाने की तरफ अग्रसर हो रही है। वैसे तो प्रत्येक भाषा की विशेषता होती है कि वह व्यक्ति के विचारों और मनोभावों को स्पष्ट एवं प्रभावी रूप से व्यक्त करें और यह संवाद का सबसे प्रमुख माध्यम है परंतु हिंदी भाषा की कुछ विशेषताएं हैं जो उसे अन्य भाषाओं से अलग और खास बनाती हैं।

14 सितंबर 1949 में भारत की संविधान सभा द्वारा हिंदी को देश की अधिकारिक राजभाषा के रूप में अपनाया गया था। आज हम हिंदी पखवाड़े के दौरान हिंदी भाषा की ऐसी ही कुछ विशेषताओं और तथ्यों के बारे में बताते हैं। हिंदी का उद्भव सभी भारतीय भाषाओं की जननी, देवभाषा संस्कृत से हुआ है जो आज तकनीकी क्षेत्र (कम्प्यूटर आधारित प्रोद्योगिकी इत्यादि) में प्रयोग के लिए सर्वाधिक उपयुक्त भाषा मानी जा रही है। हिंदी भाषा का व्याकरण संस्कृत से ही अनुप्राणित है। स्वाभाविक रूप से इसके व्याकरणिक नियम प्रायः अपवाद रहित हैं, इसलिए स्पष्ट है और आसान है। हम अपनी सम्प्रेषण का आधार जिस देवभाषा संस्कृत को मानते हैं हिंदी भाषा उसी की बड़ी बेटी कही जा सकती है।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने एक अवसर पर कहा था – कि ''भारत के युवक और युवतियां अंग्रेजी और दुनिया की दूसरी भाषाएं खूब पढ़ें मगर मैं हरगिज यह नहीं चहूंगा कि कोई भी हिंदुस्तानी अपनी मातृभाषा को भूल जाये या उसकी उपेक्षा करे या उसे देखकर शरमाये अथवा यह महसूस करे कि अपनी मातृभाषा के जरिए वह ऊंचे से ऊंचा चिंतन नहीं कर सकता।'' महात्मा गांधी जी का राजभाषा के प्रति यह चिंतन वर्तमान समय में ज्यादा प्रासंगिक

लगता है, क्योंकि पाश्चत्य संस्कृति की अंधी दौड़ में हम अपनी गौरवशाली विरासत को पीछे छोड़ते जा रहे हैं।

इसी संदर्भ में भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी ने कहा था कि – ''जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह कभी समृद्ध नहीं हो सकता।'' हमें इस परिष्कृत और वैज्ञानिक हिंदी भाषा का अधिक से अधिक प्रयोग कर उनके संरक्षण व संवर्धन में अपना योगदान देने का संकल्प लेना चाहिए। भारतीय सभ्यता, संस्कृति और संस्कारों की अविरल धारा, मुख्य रूप से हिंदी भाषा से ही जीवंत तथा सुरक्षित रह पाई है जो संपूर्ण भारत को राष्ट्रीय एकता के सूत्र में बांधकर रखी हुई है। माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में आज भारत एक संसाधन-संपन्न शक्तिशाली देश के रूप में उभर रहा है और इसमें देश की समृद्ध भाषा हिंदी का बहुत बड़ा योगदान है। वैश्विक मंचों पर नरेन्द्र मोदी जी द्वारा हिंदी में दिए गए भाषणों से, हिंदी का वैश्विक कद मजबूत हुआ है और हिंदी प्रेमियों को प्रेरणा भी मिल रही है। जिस मातृभाषा को बोलने में हमें हिचकिचाहट होती थी आज विदेशों में भी गर्व से बोला जा रहा है, यह है नेतृत्व परिवर्तन परिणाम। अब हमें अपनी खोयी हुई गौरवशाली विरासत को पुनर्जीवित करने का आत्मबल भी प्राप्त हो रहा है। हिंदी की सबसे बड़ी शक्ति इसकी वैज्ञानिकता, मौलिकता, सरलता, सुबोधता और स्वीकार्यता है, हिंदी भाषा की विशेषता है कि इसें जो बोला जाता है, वही लिखा जाता है मोदी सरकार की नई शिक्षा नीति से अन्य भारतीय भाषाओं व हिंदी का समानांतर विकास होगा।

प्रधानमंत्री जी के 'आत्मनिर्भर भारत' के अभियान को आगे बढ़ाते हुए, राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी के लिए ई-टूल्स सुदृढ़ करने का कार्य किया जा रहा है। हिंदी भाषा और बाकी सारी भारतीय भाषाओं ने मिलकर भारत की सांस्कृतिक विविधता को आगे ले जीने में बहुत बड़ा योगदान दिया है। राजभाषा हिंदी सभी भारतीय भाषाओं के साथ समन्वय करके उनका नेतृत्व भी कर रही हैं।

हम प्रतिज्ञा लें कि हिंदी की उन्नति व प्रगति की यात्रा पूरे समर्पण के साथ आगे बढ़ाते हुए हम सब मिलकर राजभाषा हिंदी को सभी स्थानीय भाषाओं के साथ में रखते हुए, हिंदी के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत का निर्माण करेंगे। हिंदी के विकास के लिए आवश्यक है कि सभी सरकारी एवं गैरसरकारी कार्य मूलरूप से हिंदी में ही किये जाएं, ताकि मौलिक रूप से इसकी जड़ें मजबूत हो सकें।

महिलाएं आत्मनिर्भर होने की तरफ बढ़ा रहीं कदम

प्रशिक्षण उपरांत दिये एवं धूपबत्ती बनातीं हुई महिलाएं एवं बच्चे

समन्वयक सुरभि पाठक - सुभाष नगर वार्ड

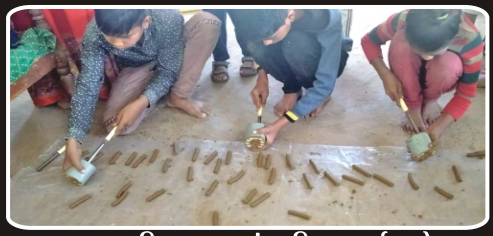

समन्वयक सरिता गुरू - संत रविदास वार्ड, भूतेश्वर

समन्वयक ममता अहिरवार - तुलसी नगर वार्ड

विचार समिति कार्यालय

गोमय सामग्री बनाने से गोबर का महत्व लगातार बढ़ता जा रहा है। अभी तक गोबर का उपयोग केवल कंडे और खाद बनाने के लिए किया जाता था लेकिन अब रंग बिरंगे दियों का रूप लेकर घरों को जगमगाने के उद्देश्य से तैयार किया जा रहा है। मोहल्ला विकास योजना से जुड़ी महिलाएं गोबर से दिये, ओम, श्री, स्वास्तिक चिन्ह, शुभ-लाभ के साथ गणेश-लक्ष्मी जी की प्रतिकात्मक प्रतिमाएं बनाकर अपनी अनोखी कलाकारी के जरिये आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ा रही हैं।

दीपावली को दियों का त्योहार कहा जाता है। इसी को देखते हुए बड़े उत्साह के साथ महिलाएं बड़ी संख्या में दिये तैयार कर रही हैं। गाय के गोबर से बनाए दिये, झूमर,

मोहल्ला विकास की महिलाओं ने बनाए रंग-बिरंगे दिये, जिन्हें विचार कार्यालय में सजाकर रखा गया।

गोमय मालाएं, सामरानी कप आदि की मांग बाजार में लगातार बढ़ रही है। पूरी तरह से प्राकृतिक और पर्यावरण अनुकूल होने के कारण न केवल शहरी बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में भी इसकी मांग लगातार बढ़ती जा रही है। गोबर के दिये विभिन्न कलाकृतियों और रंगों में उपलब्ध होने के कारण लोगों को अपनी ओर ज्यादा आकर्षित कर रहे हैं। गोबर से बने इन दीपकों का उपयोग जैविक खाद बनाने में भी किया जा सकता है। यह दिये पूर्णत: ईको-फ्रेंडली हैं।

इस संबंध में समिति की सचिव आकांक्षा मलैया ने बताया कि सबसे पहले गोबर को सुखाकर उसका पाउडर बना लिया जाता है। इसके पश्चात् आवश्यक सामग्री मिलाकर सांचों की सहायता से खूबसूरत आकार दिया जाता है। सुखाकर इन्हें अलग-अलग रंगों से सुसज्जित किया जाता है। मोहल्ला विकास की महिलाओं ने बताया कि मुझे विश्वास है कि स्थानीय महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने में सहायता मिलेगी। यह कारगर पहल सिद्ध होगी। इसके साथ-साथ तुलसी नगर, सुभाष नगर, संत रविदास वार्ड एवं विचार कार्यालय में 32 महिलाओं को समिति सदस्यों ने मोहल्ला विकास की महिलाओं को दिये बनाने का प्रशिक्षण दिया। तिलकगंज वार्ड निवासी ज्योति रैकवार ने बताया कि समिति से दिये बनाने की पूरी सामग्री मिल जाती है। प्रशिक्षण उपरांत हम सभी महिलाएं घर से भी दियों का निर्माण कार्य कर रहे हैं। दिये बनाने का भुगतान समिति द्वारा किया जाता है जिससे हमारी

संत रविदास महाराज ने समाज में फैली कुरीतियों व छुआ-छूत को समाप्त करने का अथक प्रयास किया : आकांक्षा मलैया

संत रविदास महाराज की जयंती पर विचार समिति ने शोभायात्रा का स्वागत किया

शोभायात्रा का स्वागत करती हुई कार्यकारी अध्यक्ष सुनीता अरिहंत।

संत रविदास महाराज की 645वीं जयंती पर निकली शोभायात्रा का स्वागत विचार समिति ने कटरा बाजार स्थित स्वदेशी वस्तु भंडार के सामने किया।

इस अवसर पर विचार समिति की सचिव आकांक्षा मलैया ने बताया कि गुरु रविदास एक प्रसिद्ध संत थे। उन्होंने समाज में फैली कुरीतियों व छुआ-छूत को समाप्त करने का अथक प्रयास किया। भक्ति आंदोलन के साथ साथ आध्यात्मिकता और जातिवाद के खिलाफ लोगों को जागरूक करते थे। संत रविदास ने अंपने जीवनकाल में लोगों के बीच भेदभाव को दूर करने का भी प्रयास किया और हमेशा सद्भाव और शांति से रहने की शिक्षा दी। कार्यकारी अध्यक्ष सुनीता अरिहंत ने कहा कि संत रविदास की गणना केवल भारत में ही नहीं अपितु विश्व के महान संतों में की जाती है। उनकी वाणी के अनुवाद संसार की विभिन्न भाषाओं में किए गए हैं। संत रविदास एक समाज के न होकर पूरी मानवता के गुरु थे। संत रविदास की शिक्षाएं समाज के लिए प्रासंगिक है। उनका प्रेम, सच्चाई और धार्मिक सौहार्द का पावन संदेश हर दौर में प्रासंगिक है। विचार सेवक राहुल अहिरवार ने लोगों से अपील की है कि वह संत रविदास के बताए मार्ग पर चलें। शोभायात्रा का स्वागत करने वालों में विचार सेवक पूजा लोधी, पूजा प्रजापति, जवाहर दाऊ, विनय चौरसिया आदि मौजूद थे।

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण योजनाओं का लाभ कैसे लें

स्वास्थ्य सभी के लिए अति आवश्यक है, अत: प्रत्येक नागरिक के लिए स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध होनी चाहिए। सभी नागरिकों को बुनियादी स्वास्थ्य सुविधाएं मुहैया कराने के उद्देश्य से सरकार ने विभिन्न स्वास्थ्य योजनाओं एवं कार्यक्रमों की शुरुआत की एवं उन्हें लागू किया। इस खंड में स्वास्थ्य संबंधी कार्यक्रमों, नीतियों, योजनाओं, प्रपत्रों इत्यादि की जानकारी इंटरनेट स्त्रोतों से माध्यम से ली गई है। विशिष्ट लाभार्थियों, जिसके अंतर्गत महिलाएं, बच्चे, वरिष्ठ नागरिक इत्यादि आते हैं, के लिए स्वास्थ्य संबंधी उपयोगी जानकारियां यहां प्रदान की गई हैं।

1. जन औषधि केंद्र -

महंगी दवा से परेशान आम आदमी के लिए यह अच्छी खबर है। शहर में अब डॉक्टर द्वारा लिखी गई जेनरिक दवाएं बाजार मूल्य से 80 फीसदी कम दामों पर मिल सकेंगी। यानी 100 रुपए की दवा महज 20 रुपए में। इस योजना के तहत 16 अलग-अलग बीमारियों की करीब 700 से भी ज्यादा दवाएं कम दामों पर उपलब्ध होंगी। ये योजना सिर्फ गरीबों के लिए नहीं है बल्कि सामान्य नागरिक भी इन मेडिकल स्टोर्स से दवाएं खरीद सकता है। प्रधानमंत्री जन औषधि योजना का मकसद लोगों को सस्ती कीमत पर दवा उपलब्ध कराना है। केंद्र सरकार की महत्वाकांक्षी योजनाओं में से एक है। यह आपको अपना रोजगार शुरू करने का भी अवसर देती है। भारत के हर जिले में आम जनता को वाजिब दाम पर, गुणवत्तापूर्ण जेनेरिक दवाइयां उपलब्ध करवाने के लिए औषधि कैंपेन लॉन्च किया है। यह दवाएं पूरे देश भर के विभिन्न जिलों में प्रधानमंत्री भारतीय जन औषधि केंद्र में बिकती हैं। इन दवाइयों को बेचने वाले स्टोर व्यक्तियों और संस्थाओं द्वारा उपलब्ध हैं।

प्रधानमंत्री जन औषधि योजना (PMJAY) का उद्देश्य -

- सस्ती कीमत पर सभी के लिए गुणवत्तापूर्ण जेनेरिक दवाइयां उपलब्ध करवाना।
- प्रधानमंत्री जन औषधि केन्द्रों द्वारा जेनेरिक दवाइयों की मार्केटिंग करवाना।
- सेंट्रल फार्मा पीएसयू और निजी क्षेत्रों की कंपनियों से दवाइयों की खरीददारी करना।
- औषधि केन्द्रों के काम की उचित निगरानी करना।

2. जननी सुरक्षा योजना -

इस योजना में समाज के निचले तबकों की गर्भवती महिलाओं की स्वास्थ्य सुरक्षा और सुरक्षित प्रसव सुनिश्चित करने के लिए केन्द्र

सरकार द्वारा आर्थिक मदद मिलती है। जननी सुरक्षा योजना राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के तहत एक सुरक्षित मातृत्व कार्यक्रम है। इस योजना में गर्भवती महिलाओं को 6 हजार रुपये की सम्मान राशि नगद दी जाती है। योजना का उद्देश्य मातृ एवं शिशु मृत्यु दर को कम करना है। जननी सुरक्षा योजना 2005 में शुरु हुई थी। योजना का लाभ लेने के लिए लाभार्थी को अपने क्षेत्र की आशा कार्यकर्ता के साथ नजदीकी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में खुद को पंजीकृत कराना होता है। नगद धनराशि का लाभ तीन किस्त में वितरित किया जाता है।

लाभ प्राप्त करने की शर्तें -

■ सरकारी अस्पताल के जनरल वार्ड में भर्ती होने वाली प्रत्येक गर्भवती महिला ।

■ प्राइवेट अस्पताल में बी.पी.एल. में आने वाले परिवारों की गर्भवती महिला। इसके लिये नीला-पीला राशन कार्ड अथवा परिवार स्वास्थ्य कार्ड प्रस्तुत करना होगा।

3. जननी एक्सप्रेस योजना -

इस योजना का शुभारंभ स्वास्थ्य मंत्रालय, मध्यप्रदेश सरकार द्वारा किया गया है। इस योजना का उद्देश्य संस्थागत और सुरक्षित प्रसव को बढ़ावा देना है और गर्भवती महिलाओं के लिए 24 घंटे एम्बुलेंस या परिवहन की सुविधा प्रदान करना है। इस सुविधा को पाने के लिए 108 नंबर पर काल कर सकते हैं।

पात्रता -

■ गर्भवती महिला ।

■ बीमार शिशु।

लाभ - आपातकाल के दौरान गर्भवती महिलाओं को मदद करना। घर बैठे एम्बुलेंस की सुविधा। प्रसव के पहले और प्रसव के बाद भी परिवहन की सुविधा।

4. प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना - (आयुष्मान भारत)

योजना लाभ - प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (पीएम-जेएवाई) एक स्वास्थ्य बीमा योजना है जो सभी सरकारी और सूचीबद्ध निजी अस्पतालों में भर्ती होने के लिए प्रति परिवार चिकित्सा कवरेज के लिए 5 लाख रुपये तक प्रदान करती है।

पात्रता -

■ मध्य प्रदेश का निवासी हो।

■ परिभाषित मानदंडों के अनुसार SECC (सामाजिक-आर्थिक और जाति जनगणना) डेटाबेस में सूचीबद्ध सभी परिवारों को कवर किया जाएगा।

■ आवेदक के पास आधार कार्ड होना चाहिए।

ग्रामीण क्षेत्रों में -

■ कच्चा मकान और एक कमरे में रहने वाले परिवार।

■ विकलांग सदस्य वाले परिवार।

■ अनुसूचित जाति/जनजाति

■ मजदूर वर्ग।

■ निराश्रित।

सरकार ने श्रमिकों की इन व्यावसायिक श्रेणियों की एक सूची बनाई है जो इस

प्रकार है।

- भिखारी
- घरेलू कामगार
- सड़कों पर काम करने वाले स्ट्रीट वेंडर / मोची / हॉकर / अन्य सेवा प्रदाता
- निर्माण श्रमिक/प्लंबर/मेसन/श्रम/चित्रकार / वेल्डर / सुरक्षा गार्ड / कुली और अन्य कार्यकर्ता
- स्वीपर/स्वच्छता कार्यकर्ता/माली
- गृह-आधारित कार्यकर्ता/कारीगर/हस्तशिल्प कार्यकर्ता / दर्जी
- परिवहन कर्मचारी/ड्राइवर/कंडक्टर/चालक और कंडक्टर/गाड़ी खींचने वाले/रिक्शा चालक।
- दुकान कर्मचारी/सहायक/छोटे प्रतिष्ठान में सहायक/वितरण सहायक/ वेटर।
- इलेक्ट्रीशियन / मैकेनिक / असेंबलर
- वाशर-मैन / चौकीदार

आवश्यक दस्तावेज- आधार कार्ड, राशनकार्ड, जातिप्रमाण पत्र, बैंक पासबुक, व्यवसाय प्रमाणपत्र, चिकित्सा रिपोर्ट आदि।

5. मुख्यमंत्री बाल श्रवण योजना (मप्र)-

ऐसे बच्चे जिनमें जन्म के बाद श्रवण क्षमता नहीं होने के कारण सुनने और बोलने में असमर्थ हो, उनमें सुनने और बोलने की क्षमता का विकास करना।

पात्रता मापदंड -

- बच्चे की आयु 1 से 5 वर्ष की होना चाहिए।
- गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाला परिवार होना चाहिए।
- नि:शक्त व्यक्ति (समान अवसर, अधिकार संरक्षण और पूर्ण भागीदारी) अधिनियम, 1995 के अन्तर्गत श्रवण बाधितार्थ की श्रेणी में आता हो।
- स्पर्श पोर्टल पर नाम अंकित हो।
- 5 से 7 वर्ष तक म.प्र. का मूल निवासी हो।

आवेदन कैसे करें -

आवेदक को जिले के मुख्य चिकित्सा अधिकारी को निर्धारित प्रपत्र में आवेदन भरकर देना होता है। मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय से उपचार राशि की स्वीकृति हेतु जिला कलेक्टर से अनुमोदन प्राप्त कर राशि स्वीकृत की जाती है।

- जिला पुर्नवास केन्द्र में नवजात शिशुओं के श्रवण बाधित की शीघ्र पहचान एवं निदान कार्यक्रम के अन्तर्गत पंजीयन करा सकते है।
- अभिभावक स्पर्श पोर्टल पर भी पंजीयन हेतु ऑनलाइन आवेदन कर सकेंगे। इस योजना के माध्यम से सहायता प्रदान की जायेगी।

आवश्यक दस्तावेज -

- आधार कार्ड
- जन्म प्रमाण-पत्र
- चिकित्सा पर्ची
- समग्र आई कार्ड
- पासपोर्ट आकार की फोटो

6. लालिमा अभियान -

योजना लाभ - आयरन और फोलिक एसिड की खुराक और डी-वर्मिंग टैबलेट

प्रदेश में बच्चों, किशोरी बालिकाओं और महिलाओं के बेहतर स्वास्थ्य और अनेमिया के उन्मूलन के लिए लालिमा अभियान को चालू किया गया है।

आवेदन कैसे करें -

■ अपने निकटतम आंगनवाड़ी केंद्र पर अपने आप को पंजीकृत करवाएं

■ किशोरियां अपने विद्यालय और महाविद्यालय में भी सम्पर्क कर सकती हैं।

आवश्यक दस्तावेज -

■ आधार कार्ड

■ वोटर कार्ड

■ जन्म प्रमाणपत्र

■ आंगनवाड़ी नाम

7. मुख्यमंत्री बाल हृदय उपचार योजना -

मध्य प्रदेश की इस मुख्यमंत्री बाल हृदय उपचार योजना के तहत जो बच्चे जन्म से दिल, हृदय से संबंधित रोग से ग्रसित होकर पैदा होते हैं उनको मुफ्त चिकित्सा उपलब्ध कराई जाएगी। इस सरकारी योजना का शुभारंभ मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने वित्तीय वर्ष 2011 में शुरू किया था। इस योजना का लाभ केवल वही व्यक्ति ले सकते हैं जो गरीबी रेखा से नीचे आते हैं।

आवेदन कैसे करें -

■ आवेदक को जिले के मुख्य चिकित्सा अधिकारी को निर्धारित प्रपत्र में आवेदन भरकर देना होता है।

■ मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय से उपचार राशि की स्वीकृति हेतु जिला कलेक्टर से अनुमोदन प्राप्त कर राशि स्वीकृत की जाती है।

■ मुख्य चिकित्सा अधिकारी द्वारा उपचार हेतु स्वीकृति आदेश जारी कर उपचार राशि ई-बैकिंग द्वारा संबंधित चिकित्सा संस्था को भेज दी जाती है।

■ योजना के तहत 13 सरकारी और निजी अस्पताल हैं जो राज्य और मध्य प्रदेश राज्य के बाहर स्थित हैं। इस योजना के माध्यम से 100000 तक की सहायता प्रदान की जाती है।

8. परिवार नियोजन योजना (मप्र)-

योजना लाभ - इस योजना के अंतर्गत यदि महिलाएं या पुरुष नसबंदी करवाते हैं तो उन्हें आर्थिक लाभ दिया जाता है। यह योजना परिवार नियोजन को प्रोत्साहित करने के लिए शुरू की गई है।

आवेदन कैसे करें -

■ उम्मीदवार परिवार नियोजन ऑपरेशन के लिए किसी भी सार्वजनिक/सरकारी मातृत्व गृह में पंजीकरण कर सकते हैं।

■ ऑपरेशन मुफ्त में किया जाएगा।

■ प्रसूति गृह के माध्यम से इस योजना के लिए आवेदन कर सकता / सकती है।

■ आवेदक को ऑपरेशन सर्टिफिकेट और उसके बैंक विवरण अस्पताल में जमा करना होगा और लाभ की राशि को सीधे लाभार्थी के बैंक खाते में भेजा जाएगा।

समिति के मोहल्ला विकास योजना से जुड़े पांच हजार से अधिक परिवार बना रहे है मटका जैविक खाद : नितिन पटैरिया

विचार कार्यालय में नगर निगम द्वारा स्व-सहायता समूह की महिलाओं को दिया मटका जैविक खाद बनाने का प्रशिक्षण

विचार कार्यालय में मटका खाद बनाने के प्रशिक्षण के दौरान समिति के सदस्यों, नगर निगम एवं स्व-सहायता समूह की महिलाओं ने स्वच्छता बनाए रखने की शपथ ली।

विचार कार्यालय में नगर निगम द्वारा स्व-सहायता की महिलाओं को मटका खाद बनाने का प्रशिक्षण दिया। इस प्रशिक्षण में महिलाओं ने अपने अनुभवों को निगम के अधिकारियों के साथ साझा किया।

मुख्य संगठन नितिन पटैरिया ने बताया कि पिछले तीन वर्षों से निरंतरता के साथ विचार समिति मोहल्ला विकास योजना के तहत पांच हजार से अधिक परिवारों को मटका जैविक खाद, सूखा-गीला कचरा व एंजाइम बनाने का प्रशिक्षण दे रही है।

समिति कार्यकारी अध्यक्ष सुनीता अरिहंत ने बताया कि अभी तक यह महिलाएं मटका खाद का उपयोग केवल घर के लिए कर रही थीं लेकिन वे अब बाजार में इस खाद को 30 से 100 रुपये किलो में बेंच सकती हैं।

आयोजन का संचालन करते हुए मीडिया प्रभारी अखिलेश समैया ने बताया कि नगर पालिका निगम की यह महत्वाकांक्षी योजना है। नगर निगम की रैंकिंग बढ़ाने में अभूतपूर्व सहयोग समिति द्वारा मिलता रहा है। इसी श्रृंखला में आज भी समिति के ट्रेनर और उनके सहयोगी संस्थान आर.टी.आई. एजुकेशन की समूह की सहायिका, युवा

विचार कार्यालय में मटका खाद की स्व-सहायता समूह की महिलाओं को प्रशिक्षण दिया गया।

कल्याण समिति के ट्रेनर एवं स्वच्छता ब्रांड एम्बेसडर, प्रकृति प्रेमी सहित विचार के मोहल्ला विकास के पदाधिकारी के माध्यम से आज पुन: प्रशिक्षण का कार्यक्रम विचार कार्यालय में रखा गया जिसमें 50 से अधिक स्व-सहायता समूह की महिलाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया एवं स्वच्छता बनाए रखने की शपथ ली। नगर निगम के प्रतिनिधि के तौर पर आए प्रकृति प्रेमी महेश तिवारी ने बताया कि रसोई घर से निकलने वाले सब्जियों, फलों के छिलके मटके में एकत्रित करें। उसमें थोड़ा गुड़, दही, मिट्टी का मिश्रण कर शक्तिशाली जैविक खाद बनाया जाता है जो पौधों के लिए लाभदायक सिद्ध होता है।

सामुदायिक संगठक नगर पालिका निगम श्रीमति कल्पना श्रीवास्तव ने कहा कि स्व-सहायता समूह की महिलाओं को स्वच्छता सर्वेक्षण 2022 के अंतर्गत स्वच्छता, जागरूकता कार्यक्रम में मटका खाद बना1ना सिखाया गया।

युवा कल्याण समिति के एनजीओ वर्कर अमन ठाकुर ने भी प्रशिक्षण में सहयोग किया। आरआईटी एजुकेशन समूह सहायिका दुर्गा पटैल ने महिलाओं को स्व सहायता समूह का लेखा-जोखा रखने संबंधित विशेष जानकारी से अवगत कराया। समिति कार्यकारी अध्यक्ष सुनीता अरिहंत ने सभी का आभार माना। इस अवसर पर पूजा श्रीवास्तव, दीपेश ठाकुर, ममता अहिरवार, रचना पटैल, सेवंती पटैल, उर्मला चौरसिया, द्रोपदी नामदेव, प्रीति केशरवानी, पुष्पलता शुक्ला, राहुल अहिरवार, माधव यादव, पूजा प्रजापति, पूजा लोधी, अरविंद, जवाहर दाऊ उपस्थित थे।

दांतों की समस्या पूरे स्वास्थ्य को प्रभावित करती है : डॉ. अंजलि जैन

विचार समिति द्वारा आयोजित नि:शुल्क दंत चिकित्सा परामर्श शिविर में 35 मरीजों का चैकअप व दवाइयां वितरित कीं

निःशुल्क दंत चिकित्सा परामर्श शिविर में डॉ. अंजली जैन का सम्मान करती हुई विचार टीम

विचार समिति ने नि:शुल्क दंत चिकित्सा परामर्श शिविर का आयोजन किया। यह शिविर श्रद्धा श्री अस्पताल, विजय टाकीज रोड कटरा में संपन्न हुआ। इस शिविर में डॉ. अंजलि जैन ने मरीजों का चैकअप किया। इस अवसर पर समिति द्वारा डॉ. अंजलि जैन का सम्मान किया गया।

इस आयोजन की जानकारी देते हुए कार्यकारी अध्यक्ष सुनीता अरिहंत ने कहा कि शिविर लगाने का उद्देश्य यह है कि जो लोग तकलीफ होने के बावजूद या फीस के अभाव में डॉक्टर के पास नहीं पहुंचते हैं, सही इलाज नहीं करवा पाते हैं उन्हें इस शिविर में लाभ मिलेगा। शिविर में 35 मरीजों का चैकअप किया गया व नि:शुल्क दवाइयां वितरित की गईं।

इस अवसर पर समिति सचिव आकांक्षा मलैया ने बताया कि दांतों की समस्या एक आम समस्या है। इस समस्या पर ध्यान न देने से बड़े रोग के रूप में सामने आती है जैसे मुंह का कैंसर। इस शिविर के माध्यम से दांतों की सुरक्षा तथा देखभाल से संबंधित आवश्यक जानकारियां उपलब्ध कराई गईं। समिति का प्रयास रहेगा कि आगे भी इस तरह के शिविर

डॉ. अंजली जैन को चंदन लगाती हुई विचार सेवक पूजा प्रजापति, पूजा लोधी।

लगाए जाएं ताकि जरूरतमंदों का सही समय पर इलाज हो सके।

डॉ. अंजलि जैन ने मरीजों को सलाह देते हुए कहा कि दांतों की समस्या को हम ज्यादा महत्व नहीं देते लेकिन यह समस्या धीरे-धीरे आगे बढ़ती हैं और पूरे स्वास्थ्य को प्रभावित करती हैं। इन समस्याओं से बचने के लिए कम से कम साल में एक बार दांतों का चैकअप जरूर करवाएं। उन्होंने बताया कि इन समस्याओं को बढ़ाने में मुख्य रूप से तम्बाकू, गुटखा, सुपाड़ी, जंकफूड आदि की विशेष भूमिका रहती है। आज अगर 100 बच्चों का चैकअप किया जाए तो 80 बच्चों में दांतों की समस्या देखने को मिलती है। मैं विचार समिति का बहुत-बहुत आभारी हूं जिन्होंने मुझे इस शिविर के माध्यम से मरीजों को देखने का अवसर प्रदान किया।

विचार सेवक आकाश हार्डवेयर ने बताया कि समिति द्वारा लगाया गया शिविर बहुत अच्छा रहा जहां लोगों को दांतों से जुड़ीं समस्याओं का समाधान मिला।

चैकअप करवाने आए मरीजों ने बताया कि बहुत दिनों से दांतों में झनझनाहट, मसूड़ों में खून आना, दांतों में दर्द होना, मुंह से बदबू आना, दांतों का घुरना आदि समस्याएं आ रही थीं। विचार समिति के हम सभी आभारी हैं जिन्होंने यह शिविर लगाया। इस अवसर पर मार्गदर्शक हरगोविंद विश्व, आकाश हार्डवेयर, राहुल अहिरवार, माधव यादव, पूजा प्रजापति, पूजा लोधी उपस्थित थीं।

पॉलिसी रिसर्च फाउंडेशन (दिल्ली) के सहयोग से विचार समिति सागर में रिसर्च का कार्य करेगी

विचार समिति सचिव आकांक्षा मलैया एवं सहायक भुवनेश सोनी ने पॉलिसी रिसर्च फाउंडेशन (दिल्ली) का भ्रमण किया। इस दौरान भुवनेश सोनी ने बताया कि समिति रिसर्च से जुड़े सभी मुद्दों पर पीआरएफ के सहयोग से सागर शहर के विकास के क्षेत्रों में कार्य करेगी। ज्ञातव्य हो कि नीति अनुसंधान के प्रति समर्पित योगदान के लिए पीआरएफ को 'ग्लोबल चेंजमेकर्स अवार्ड' से सम्मानित किया गया है।

पॉलिसी रिसर्च फाउंडेशन (पीआरएफ) एक थिंक-टैंक है जो मुख्य रूप से आर्थिक नीतियों, शिक्षा, पर्यावरण और विभिन्न जागरूकता कार्यक्रमों पर काम कर रहा है। यह अन्य सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों के साथ निकट समन्वय में काम करता है। वर्तमान में यह राज्यों के साथ-साथ केंद्र की आर्थिक और पर्यावरणीय नीतियों पर ध्यान केंद्रित कर रहा है और निरंतर और संतुलित विकास प्राप्त करने के लिए नीतिगत हस्तक्षेप का प्रस्ताव करता है।

पीआरएफ विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों और कार्यान्वयन प्रक्रिया में प्रतिभागियों को एक साथ लाता है ताकि जमीनी स्तर पर प्रभावी और टिकाऊ परिणाम प्राप्त किए जा सकें। पीआरएफ तीन क्षमताओं में अपने संचालन के क्षेत्रों में संलग्न है। सबसे पहले, यह नीतियां बनाता है। ये नीतियां विभिन्न क्षेत्रों में काम करने वाले विशेषज्ञों के समूहों द्वारा तैयार की जाती हैं। दूसरा, नीतियों से सरकारी अधिकारियों को अवगत कराया जाता है और पीआरएफ खुद को कार्यान्वयन प्रक्रिया में शामिल करता है। तीसरा प्रस्तावित और कार्यान्वित नीतियों का महत्वपूर्ण विश्लेषण है। तीसरी प्रक्रिया नीतियों के प्रभाव और प्रभावशीलता का आकलन करने के लिए एक स्वतंत्र प्रक्रिया के रूप में की जाती है। पीआरएफ का उद्देश्य सामाजिक-आर्थिक और राजनीति जैसे विभिन्न क्षेत्रों के लिए प्रासंगिक महत्वपूर्ण नीतियां विकसित करना है। प्रारंभ में पीआरएफ ने सतत् विकास क्षेत्रों पर काम करने का निर्णय लिया है, जो इस प्रकार हैं।

- आर्थिक/वित्तीय विकास
- सामाजिक विकास
- शैक्षिक सुधार
- लैंगिक समानता/सुग्राहीकरण
- पर्यटन क्षेत्र ■ स्वास्थ्य क्षेत्र
- शहरी और ग्रामीण स्थानीय निकाय
- पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन (स्वच्छ जल, स्वच्छता और अपशिष्ट प्रबंधन)
- विधायी सुधार
- सुशासन
- संस्कृति और सभ्यता

WORLD NGO DAY

27 FEBRUARY 2022

वर्ल्ड एनजीओ डे की आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं

विश्व एनजीओ दिवस का उद्देश्य लोगों को एनजीओ के अंदर सक्रिय रूप से शामिल होने और एनजीओ तथा सार्वजनिक व निजी क्षेत्र दोनों के बीच अधिक सहजीवन को प्रोत्साहित करना है। विश्व एनजीओ दिवस की सार्वभौमिक अवधारणा विश्व भर के विभिन्न एनजीओ, तथा उनके पीछे लोगों की जश्न मनाने, अभिनन्दन करने तथा सहयोग करने की है।

विश्व भर के एनजीओ के लिए विश्व एनजीओ दिवस एक–दूसरे के साथ ज्ञान और अनुभव को साझा करने के लिए है। इसका उद्देश्य विश्वभर के लोगों को एनजीओ और उनके प्रभाव के बारे में शिक्षित करना है। विश्व एनजीओ दिवस एनजीओ संस्थापकों, कर्मचारियों, स्वयंसेवियों, सदस्यों और समर्थकों को सम्मानित करने और याद करने का अवसर प्रदान करता है।

समिति द्वारा की गई गतिविधियों की कुछ झलकियां

मोहल्ला विकास योजना से संचालित हैं 127 टीमें

सुभाष नगर में नई टीम का गठन करती हुई कार्यकारी अध्यक्ष सुनीता अरिहंत।

समिति द्वारा मोहल्ला विकास योजना की शुरूआत तीन वर्ष पहले हुई थी जिसमें शहर के 14 हजार से अधिक परिवार जुड़े हुए हैं। मोहल्ला विकास योजना इन परिवारों में आपसी सहयोग, सामाजिक दायित्व के साथ नि:शुल्क डॉक्टरी जांच, कम्प्यूटर शिक्षा, पुस्तकालय व वाचनालय, प्राकृतिक खेती, पर्यावरण संवर्धन, जागरूकता के साथ, स्वरोजगार की दिशा में उन्मुख कार्य कर रही है। मोहल्ला विकास से जुड़े परिवारों का समिति द्वारा समय-समय पर सर्वे कराया जाता है जिनमें शिक्षा, स्वास्थ्य, नशामुक्ति आदि विषयों पर लोगों को जागरूक करते हुए आवश्यक जानकारियां दी जाती हैं। मोहल्ला विकास योजना की कार्यशीलता की लोकप्रियता के कारण अब शहर के अन्य वार्डों के परिवार भी इस योजना में सम्मिलित होने के इच्छुक हुए हैं एवं हाल ही में सुभाष नगर में नई मोहल्ला टीम का गठन किया गया है। समिति कार्यकारी अध्यक्ष सुनीता अरिहंत ने महिलाओं को इस योजना की जानकारी देते हुए बताया कि 100 घरों के एक समूह को मोहल्ले का नाम दिया जाता है। इन 100 घरों की जिम्मेदारी 11 सदस्यीय टीम लेती है। टीम से ही सर्व सम्मति से एक महिला या पुरूष को समन्वयक के तौर पर चुना जाता है। एक समन्वयक, दस पालक, सौ परिवार मिलकर साथ कार्य करते हैं। समन्वयक सुरभि पाठक ने हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि समिति की सभी योजनाएं लोककल्याण की दृष्टि से की जा रही हैं। ऐसी जनहितकारी योजनाओं में हम सभी साथ मिलकर सहयोग करेंगे। इस कार्यक्रम में राहुल अहिरवार, जवाहर दाऊ उपस्थित थे।

पालक सदस्य - ललिता कोरी, रीता सेन, कमला पटेल, शोभा जाटव, प्रीति शुक्ला, कलाबाई लोधी, सरोज दुबे, अनुराधा चौबे।

मीडिया कवरेज

दैनिक भास्कर

सागर 24-02-2022

दांतों की समस्या पूरे स्वास्थ्य को प्रभावित करती है, साल में एक बार चेकअप जरूर कराएं : डॉ. जैन

भास्कर संवाददाता | सागर

विचार समिति ने बुधवार को निजी अस्पताल में निशुल्क दंत चिकित्सा परामर्श शिविर का आयोजन किया। जिसमें डॉ. अंजली जैन ने मरीजों की जांच की। उन्होंने मरीजों को सलाह देते हुए कहा दांतों की समस्या को हम ज्यादा महत्व नहीं देते हैं। जबकि यह समस्या धीरे-धीरे आगे बढ़ती है और पूरे स्वास्थ्य को प्रभावित करती है। इन समस्याओं से बचने के लिए कम से कम साल में एक बार दांतों का चैकअप जरुर करवाएं। उन्होंने बताया इन समस्याओं को बढ़ाने में मुख्य रूप से तंबाकू, गुटखा, सुपाड़ी, जंकफूड आदि की विशेष भूमिका रहती है। आज अगर 100 बच्चों का चैकअप किया जाए तो 80 बच्चों में दांतों की

दंत चिकित्सा शिविर में मरीजों की जांच की गई।

समस्या देखने को मिलती है। शिविर की कार्यकारी अध्यक्ष सुनीता अरिहंत ने कहा कि शिविर लगाने का उद्देश्य यह है कि जो लोग तकलीफ होने के बावजूद या फीस के अभाव में डॉक्टर के पास नहीं पहुंचते हैं एवं सही इलाज नहीं करवा पाते हैं, ऐसे मरीजों को इस शिविर में लाभ मिलेगा। शिविर में 35 मरीजों की जांच कर निशुल्क दवाइयां वितरित की गईं। समिति सचिव आकांक्षा मलैया ने बताया दांतों की समस्या एक आम समस्या है। इस समस्या पर ध्यान न देने से यह बड़े रोग के रूप में सामने आती है, जैसे मुंह का कैंसर। इस शिविर के माध्यम से दांतों की सुरक्षा तथा देखभाल से संबंधित आवश्यक जानकारियां उपलब्ध कराई गईं। समिति आगे भी इस तरह के शिविर लगाएगी। ताकि जरूरतमंदों का समय पर इलाज हो। मरीजों ने बताया कि बहुत दिनों से दांतों में झनझनाहट, मसूड़ों में खून आना, दांतों में दर्द होना, मुंह से बदबू आना, दांतों का घुरना आदि समस्याएं आ रही थीं। विचार समिति के हम सभी आभारी हैं जिन्होंने यह शिविर लगाया। इस अवसर पर मार्गदर्शक हरगोविंद विश्व, विचार सेवक आकाश हार्डवेयर, राहुल अहिरवार, माधव आदि मौजूद थे।

दैनिक भास्कर

सागर 18-02-2022

स्वागत... संत रविदास ने भेदभाव को दूर करने और सद्भाव से रहने की शिक्षा दी: आकांक्षा

सागर | संत रविदास महाराज की जयंती पर निकली शोभायात्रा का स्वागत विचार समिति ने कटरा बाजार स्थित स्वदेशी वस्तु भंडार के सामने किया। समिति की सचिव आकांक्षा मलैया ने कहा गुरु रविदास ने समाज में फैली कुरीतियों व छुआछूत को समाप्त करने का अथक प्रयास किया। उन्होंने अपने जीवनकाल में लोगों के बीच भेदभाव को दूर करने का भी प्रयास किया और हमेशा सद्भाव और शांति से रहने की शिक्षा दी। कार्यकारी अध्यक्ष सुनीता अरिहंत ने कहा कि संत रविदास की गणना केवल भारत में ही नहीं अपितु विश्व के महान संतों में की जाती है। उनकी वाणी के अनुवाद संसार की विभिन्न भाषाओं में पाए जाते हैं। संत रविदास एक समाज के न होकर पूरी मानवता के गुरु थे। विचार सेवक राहुल अहिरवार ने लोगों से अपील की है कि वह संत रविदास के बताए मार्ग पर चलें। शोभायात्रा का स्वागत करने वालों में पूजा लोधी, पूजा प्रजापति, जवाहर, विनय चौरसिया आदि मौजूद थे।

सागर दिनकर

दांतों की समस्या पूरे स्वास्थ्य को प्रभावित करती है:डॉ. अंजलि जैन

निःशुल्क दंत चिकित्सा परामर्श शिविर में 35 मरीजों का चैकअप व दवाइयां वितरित की

सागर। विचार समिति ने निःशुल्क दंत चिकित्सा परामर्श शिविर का आयोजन किया। यह शिविर श्रद्धा श्री अस्पताल, विजय टाकीज रोड कटरा में संपन्न हुआ। इस शिविर में डॉ. अंजलि जैन ने मरीजों का चैकअप किया। इस अवसर पर समिति द्वारा डॉ. अंजलि जैन का सम्मान किया गया। इस आयोजन की जानकारी देते हुए कार्यकारी अध्यक्ष सुनीता अरिहंत ने कहा कि शिविर लगाने का उद्देश्य यह है कि जो लोग तकलीफ होने के बावजूद या फीस के अभाव में डॉक्टर के पास नहीं पहुंचते हैं, सही इलाज नहीं करवा पाते हैं उन्हें इस शिविर में लाभ मिलेगा। शिविर में 35 मरीजों का चैकअप किया गया व निःशुल्क दवाइयां वितरित की गई।

इस अवसर पर समिति सचिव आकांक्षा मलैया ने बताया कि दांतों की समस्या एक आम समस्या है। इस समस्या पर ध्यान न देने से बड़े रोग के रूप में सामने आती है। जैसे मुंह का कैंसर। इस शिविर के माध्यम से दांतों की सुरक्षा तथा देखभाल से संबंधित आवश्यक जानकारियां उपलब्ध कराई गईं। समिति का प्रयास रहेगा कि आगे भी इस तरह के शिविर लगाए जाएं ताकि जरूरतमंदों का सही समय पर इलाज हो सके। डॉ. अंजलि जैन ने मरीजों को सलाह देते हुए कहा कि दांतों की समस्या को हम ज्यादा महत्व नहीं देते लेकिन यह समस्या धीरे-धीरे आगे बढ़ती हैं और पूरे स्वास्थ्य को प्रभावित करती हैं। इन समस्याओं से बचने के लिए कम से कम साल में एक बार दांतों का चैकअप जरूर करवाएं। उन्होंने बताया कि इन समस्याओं को बढ़ाने में मुख्य रूप से तम्बाकू, गुटखा, सुपाड़ी, जंकफूड आदि की विशेष भूमिका रहती है।

दैनिक भास्कर

सागर 28-02-2022

पहल • विचार कार्यालय में नगर निगम ने स्व-सहायता समूह की महिलाओं को मटका खाद बनाने का प्रशिक्षण दिया

विचार समिति से जुड़े 5 हजार मोहल्ला परिवार बना रहे मटका जैविक खाद, अब 30 से 100 रुपए प्रतिकिलो बेच भी सकेंगे

भास्कर संवाददाता | सागर

विचार कार्यालय में नगर निगम द्वारा स्व-सहायता की महिलाओं को मटका खाद बनाने का प्रशिक्षण दिया गया। इस दौरान महिलाओं ने अपने अनुभव अधिकारियों से साझा किए। मुख्य संगठक नितिन पटैरिया ने बताया पिछले तीन वर्षों से निरंतरता के साथ विचार समिति मोहल्ला विकास योजना के तहत पांच हजार से अधिक परिवारों को मटका जैविक खाद, सूखा-गीला कचरा व एंजाइम बनाने का प्रशिक्षण दे रही है। समिति

सागर। स्व-सहायता की महिलाओं को मटका खाद बनाने का प्रशिक्षण दिया।

की कार्यकारी अध्यक्ष सुनीता अरिहंत ने बताया अभी तक यह महिलाएं मटका खाद का उपयोग केवल घर के लिए कर रही थीं लेकिन वे अब बाजार में इस खाद को 30 से 100 रुपए किलो में बेच सकती हैं। मीडिया प्रभारी अखिलेश समैया ने बताया निगम की यह महत्वाकांक्षी योजना है। नगर निगम की रैंकिंग बढ़ाने में अभूतपूर्व सहयोग समिति द्वारा मिलता रहा है। इसी श्रृंखला में समिति के ट्रेनर और उनके सहयोगी संस्थान की समूह की सहायिका, युवा कल्याण समिति के ट्रेनर एवं स्वच्छता ब्रांड एंबेसडर, प्रकृति प्रेमी सहित विचार के मोहल्ला विकास के पदाधिकारी के माध्यम से दोबारा प्रशिक्षण का कार्यक्रम विचार कार्यालय में रखा गया। जिसमें 50 से अधिक स्व-सहायता समूह की महिलाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया एवं स्वच्छता बनाए रखने की शपथ ली। निगम के प्रतिनिधि के तौर पर आए प्रकृति प्रेमी महेश तिवारी ने बताया रसोई घर से निकलने वाले सब्जियों, फलों के छिलके मटके में एकत्रित करें। उसमें थोड़ा गुड़, दही, मिट्टी का मिश्रण कर शक्तिशाली जैविक खाद बनाया जाता है जो पौधों के लिए लाभदायक सिद्ध होता है। सामुदायिक संगठक निगम की कल्पना श्रीवास्तव ने कहा स्व-सहायता समूह की महिलाओं को स्वच्छता सर्वेक्षण 2022 के अंतर्गत स्वच्छता, जागरूकता कार्यक्रम में मटका खाद बनाना सिखाया गया। युवा कल्याण समिति के एनजीओ वर्कर अमन ठाकुर ने भी प्रशिक्षण में सहयोग किया।

आयोजन शिविर में 35 मरीजों का चैकअप व दवाइयां वितरित कीं

दांतों की समस्या पूरे स्वास्थ्य को प्रभावित करती है: डॉ. अंजलि

सागर, आचरण संवाददाता।

विचार समिति ने निःशुल्क दंत चिकित्सा परामर्श शिविर का आयोजन किया। यह शिविर श्रद्धा श्री अस्पताल, विजय टाकीज रोड कटरा में संपन्न हुआ। इस शिविर में डॉ. अंजलि जैन ने मरीजों का चैकअप किया। इस अवसर पर समिति द्वारा डॉ. अंजलि जैन का सम्मान किया गया। इस आयोजन की जानकारी देते हुए कार्यकारी अध्यक्ष सुनीता अरिहंत ने कहा कि शिविर लगाने का उद्देश्य यह है कि जो लोग तकलीफ होने के बावजूद या फीस के अभाव में डॉक्टर के पास नहीं पहुंचते हैं, सही इलाज नहीं करवा पाते हैं उन्हें इस शिविर में लाभ मिलेगा। शिविर में 35 मरीजों का चैकअप किया गया व निःशुल्क दवाइयां वितरित की गईं।

इस अवसर पर समिति सचिव आकांक्षा मलैया ने बताया कि दांतों की समस्या एक आम समस्या है। इस समस्या पर ध्यान न देने से बड़े रोग के रूप में सामने आती है जैसे मुंह का कैंसर। इस शिविर के माध्यम से दांतों की सुरक्षा तथा देखभाल से संबंधित आवश्यक जानकारियां उपलब्ध कराई गईं। समिति का प्रयास रहेगा कि आगे भी इस तरह के शिविर लगाए जाएं ताकि जरूरतमंदों का सही समय पर इलाज हो सके।

डॉ. अंजलि जैन ने मरीजों को सलाह देते हुए कहा कि दांतों की समस्या को हम ज्यादा महत्व नहीं देते लेकिन यह समस्या धीरे-धीरे आगे बढ़ती हैं और पूरे स्वास्थ्य को प्रभावित करती हैं। इन समस्याओं से बचने के लिए कम से कम साल में एक बार दांतों का चैकअप जरूर करवाएं। उन्होंने बताया कि इन समस्याओं को बढ़ाने में मुख्य रूप से तम्बाकू, गुटखा, सुपाड़ी, जंकफूड आदि की विशेष भूमिका रहती है। आज अगर 100 बच्चों का चैकअप किया जाए तो 80 बच्चों में दांतों की समस्या देखने को मिलती है। मैं विचार समिति का बहुत-बहुत आभारी हूं जिन्होंने मुझे इस शिविर के माध्यम से मरीजों को देखने का अवसर प्रदान किया। विचार सेवक आकाश हार्डवेयर ने बताया कि समिति द्वारा लगाया गया शिविर बहुत अच्छा रहा जहां लोगों को दांतों से जुड़ी समस्याओं का समाधान मिला।

चैकअप करवाने आए मरीजों ने बताया कि बहुत दिनों से दांतों में झनझनाहट, मसूड़ों में खून आना, दांतों में दर्द होना, मुंह से बदबू आना, दांतों का घुरना आदि समस्याएं आ रही थीं। विचार समिति के हम सभी आभारी हैं जिन्होंने यह शिविर लगाया। इस अवसर पर मार्गदर्शक हरगोविंद विश्व, विचार सेवक आकाश हार्डवेयर, राहुल अहिरवार, माधव यादव, पूजा प्रजापति, पूजा लोधी आदि उपस्थित थे।

॥ विचार समिति ॥

(स्थापना वर्ष 2003)

निवेदन

आपसे निवेदन है कि अधिक से अधिक मात्रा में दान देकर इस मुहिम को आगे बढ़ाने में सहयोग करें।

दान राशि बैंक खाते में डालने हेतु जानकारी इस प्रकार है।

Bank a/c name- VicharSamiti
Bank- State Bank of India
Account No.- 37941791894
IFSC code- SBIN0000475
Paytm/ Phonepe/ Googlepay/ upi
आदि दान करने के लिए नीचे दिए गए
QR कोड को स्कैन करें.

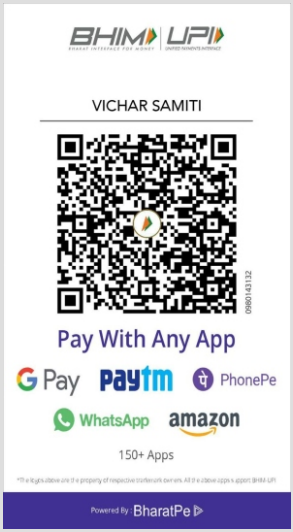

- संपर्क -

Website : vicharsanstha.com
Facebook : Vichar Sanstha
Youtube : Vichar Samachar
Ph. No. : 9575737475, 9009780042, 07582-224488
Address : 258/1, Malgodam Road, Tilakganj Ward, Behind Adinath Cars Pvt. Ltd, Sagar (M.P.) 470002